TEACHERS OF BIHAR

दैनिक ज्ञानकोश

सीखें-सिखाएं, बिहार को आगे बढ़ायें

teachersofbihar@gmail.com

https://twitter.com/teachersofbihar

https://www.youtube.com/c/teachersofbihar

29 सितंबर 2025

Teachers of Bihar

The Change Makers

आज का सुविचार

काम आपको अर्थ और उद्देश्य देता है,

और इसके बिना जीवन खाली है।

स्टीफन हॉकिंग

राकेश कुमार

मधु प्रिया

रुडॉल्फ डीजल का निधन 29 सितंबर

रुडॉल्फ डीजल का जन्म पैरिस में हुआ था। इनके मातापिता सन् 1870 से इंग्लैंड में रहने लगे, किंतु अपेन बेटे को इन्होंने जर्मनी में ऑग्सवर्ग और म्यूनिख के कालेजों में पढ़ने भेजा। शिक्षा के पश्चात् ये कुछ काल तक पैरिस में शीतक यंत्रों के एक कारखाने के मैनेजर रहे, किंतु फिर म्यूनिख लौट गए। म्यूनिख में इन्होंने वे अनुसंधान आरंभ किए जिनके आधार पर भविष्य में डीज़ल इंजन बना। सन् 1893 में इन्हीं अनुसंधानों से संबंधित ग्रंथ दि थ्योरी ऐंड कंस्ट्रक्शन ऑव ए रेशनल हीट मोटर नामक ग्रंथ इन्होंने लिखा। इसी वर्ष क्रुप तथा ऑग्सबर्ग के कारखानों में डीज़ल इंजनों का निर्माण आरंभ हुआ, किंतु इसको व्यावहारिक रूप देने में इन्हें चार वर्ष लगे। सन् 1899 में इन्हीं इंजनों के बनाने का कारखाना इन्होंने ऑग्सबर्ग में खोला और अपना शेष जीवन इन इंजनों को पूर्ण रूप से उपयोगी बनाने में बिताया। डीज़ल की मृत्यु की व्याख्या करने के लिए विभिन्न सिद्धांत हैं, जैसे कि डीज़ल के जीवनी लेखक ग्रॉसर (1978) और सिटाउर (1978) ने तर्क दिया है, कि उन्होंने आत्महत्या की है। विचार की एक अन्य पंक्ति से पता चलता है कि उनकी हत्या कर दी गई थी, क्योंकि उन्होंने जर्मन बलों को अपने आविष्कार का उपयोग करने के विशेष अधिकार देने से इनकार कर दिया था। वास्तव में, डीजल ब्रिटिश पनडुब्बियों को डीजल इंजन द्वारा शक्ति प्रदान करने की संभावना पर चर्चा करने के लिए ब्रिटिश रॉयल नेवी के प्रतिनिधियों के साथ बैठक करने के इरादे से एसएस ड्रेसडेन में सवार हुए थे। लेकिन सभी स्पष्टीकरणों के लिए सबूत सीमित हैं, और उसका गायब होना और मृत्यु अनसुलझा है। डीज़ल के लापता होने के कुछ ही समय बाद, उसकी पत्नी मार्था ने एक बैग खोला जो उसके पति ने अपनी दुर्भाग्यपूर्ण यात्रा से ठीक पहले उसे दिया था, इस निर्देश के साथ कि इसे अगले सप्ताह तक नहीं खोला जाना चाहिए। उन्हें नकदी में 20,000 जर्मन मार्क मिले (आज 120,000 अमेरिकी डॉलर) और वित्तीय विवरण यह दर्शाते हैं कि उनके बैंक खाते लगभग खाली थे। जहाज पर डीजल के द्वाराअपने साथ लाए गए एक डायरी में 29 सितंबर 1913 की तारीख के लिए एक क्रॉस बनाया गया था, जो संभवतः मृत्यु का संकेत दे रहा था।

पुण्यतिथि विशेष 29 सितंबर

मातंगिनी हज़ारा *Matangini Hazra*; जन्म- 19 अक्टूबर, 1870, पश्चिम बंगाल; शहादत- 29 सितम्बर, 1942) भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाली बंगाल की वीरांगनाओं में से थीं। भारतीय इतिहास में उनका नाम बड़े ही मान-सम्मान के साथ लिया जाता है। मातंगिनी हज़ारा विधवा स्त्री अवश्य थीं, किंतु अवसर आने पर उन्होंने अदम्य शौर्य और साहस का परिचय दिया था। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के तहत ही सशस्त्र अंग्रेज़ सेना ने आन्दोलनकारियों को रुकने के लिए कहा। मातंगिनी हज़ारा ने साहस का परिचय देते हुए राष्ट्रीय ध्वज को अपने हाथों में ले लिया और जुलूस में सबसे आगे आ गईं। इसी समय उन पर गोलियाँ दागी गईं और इस वीरांगना ने देश के लिए अपनी कुर्बानी दी।

TOB

खेल कॉर्नर

वेस्टइंडीज टेस्ट सीरीज

भारतीय स्क्वॉड

ध्रुव जुरेल

एन जगदीसन

बैटर्स

केएल राहुल

शुभमन गिल

यशस्वी जायसवाल

साई सुदर्शन

देवदत्त पडिक्कल

ऑलराउंडर्स

रवींद्र जडेजा

वॉशिंगटन सुंदर

अक्षर पटेल

नीतीश रेड्डी

बॉलर्स

जसप्रीत बुमराह

मोहम्मद सिराज

प्रसिद्ध कृष्णा

कुलदीप यादव

www.teachersofbihar.org

राकेश कुमार

Teachers of Bihar

The Change Makers

शिक्षा शब्दकोश

आज का शब्द 29.09.2025

सहयोगात्मक कौशल

सहयोगात्मक कौशल वे योग्यताएँ हैं जो लोगों को एक साझा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से एक साथ काम करने में सक्षम बनाती हैं, जिसमें स्पष्ट संचार, सक्रिय रूप से सुनना, टीम के भीतर संघर्षों का समाधान करना, एक-दूसरे की मदद करने की इच्छा, और एक-दूसरे के विचारों को सम्मान देना शामिल है. ये कौशल न केवल टीम की उत्पादकता बढ़ाते हैं, बल्कि सदस्यों के बीच बेहतर संबंध बनाने और एक समावेशी, सहायक वातावरण बनाने में भी मदद करते हैं।

रोचक तथ्य/सामान्य ज्ञान

प्रियंका तिवारी ने उत्तर प्रदेश के राजपुर गाँव को सिर्फ एक साल में **75% प्लास्टिक-फ्री**, ग्रेवॉटर रीसाइक्लिंग, क्रेमेटोरियम और लाइब्रेरी जैसी सुविधाओं के साथ बदलकर **विकास** की नई मिसाल कायम की। 2021 में सिर्फ **29 साल** की उम्र में उन्होंने **सरपंच** का चुनाव जीतकर अपने गाँव के लिए नई राह बनाई।

राकेश कुमार

पद्य पंकज

"

विपदाओं से मुझे बचाना
ये नहीं प्रार्थना मेरी
विपदाओं में न होऊं भयभीत
जब दुखी हूं,चित्त व्यथित हो
न भी दो सांत्वना
दुखों को बस कर पाऊं जय मैं
सहाय अगर जो कभी न जुटे
बल न मेरा फिर भी टूटे
क्षति जो घटे जगत में
लायेगी केवल वंचना
अपने मन में न मानूं कोई क्षय।

रविन्द्र नाथ टैगोर

Madhu priya

www.padyapankaj.teachersofbihar.org

29 सितंबर
TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS
वर्ल्ड हार्ट डे
Madhu priya
www.teachersofbihar.org